1

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

देव त्वष्टर्वर्धय सर्वसातये। अथर्ववेद 613/3

सब सुखों के दाता परमेश्वर ! जगत निर्माता प्रभो! हमें इतना समृद्ध कर कि सब कुछ पा सकें।

O God ! The bestower of happiness and prosperity, Creator of the world ! make us so capable that we way attain all that we aspire for.

वर्ष 41, अंक 2 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 30 अक्तूबर, 2017 से रविवार 5 नवम्बर, 2017
विक्रमी सम्वत् 2074 सृष्टि सम्वत् 1960853118
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के तत्त्वावधान महर्षि दयानन्द सरस्वती का 134वां निर्वाणोत्सव सम्पन्न

महर्षि दयानन्द का बलिदान हमें जीने की राह दिखाता है – सुरेशचन्द्र आर्य, प्रधान

धर्म, आध्यात्म और नैतिकता हेतु वेदों की ओर लौटना आवश्यक – डॉ. महेश विद्यालंकार

यज्ञ के वैज्ञानिक शोध से ही मनाया जाएगा अन्तर्राष्ट्रीय यज्ञ दिवस – आचार्य सनत् कुमार

महर्षि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए बर्मा में एम.डी.एच. के सहयोग से शीघ्र ही 'आर्ष गुरुकुल' स्थापित होगा

महर्षि दयानन्द जी का बलिदान हमें जीने की राह दिखाता है। महर्षि दयानन्द ने जो सपने संजोये थे उस आर्य समाज की आज क्या दशा है उसका ग्राफ ऊंचा जा रहा है या नीचे इसे जानने के लिए आत्म चिन्तन व विचार करने का समय आ गया है। आज हमारा आध्यात्मिक पक्ष बहुत कमजोर होता जा रहा है। यदि हम सच्चे आर्य बन जायें तभी हम अपने परिवार को आर्य बना सकेंगे अपने पड़ोसी को आर्य बना सकेंगे और फिर अपने मोहल्ले, समाज और देश को आर्य बना सकेंगे।'' ये विचार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी ने आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली द्वारा 19 अक्तूबर, 2017 को दिल्ली के रामलीला मैदान में आयोजित 134वें महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में कविता के माध्यम से श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए व्यक्त किए। समारोह का शुभारम्भ श्री सूर्यदेव शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में आयोजित यज्ञ एवं श्री सत्पाल भरारा जी, प्रसिद्ध समाजसेवी ने जयघोष

दिल्ली सभा द्वारा प्रकाशित एवं डॉ. महेश विद्यालंकार जी की पुस्तक मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का प्रेरक स्वरूप का विमोचन करते अधिकारीगण एवं उपस्थित आर्यजन

– शेष पृष्ठ 4 पर

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य का त्रैवार्षिक साधारण सभा अधिवेशन सम्पन्न

महाशय धर्मपाल सर्वसम्मति से पुनः प्रधान निर्वाचित

सभा को मजबूत करने के लिए सबको मिलकर कार्य करना होगा – महाशय धर्मपाल

दिनाँक 29 अक्टूबर, 2017 को सायं 3 बजे आर्यसमाज पटेलनगर नई दिल्ली के सभागार में **प्रधान महाशय धर्मपाल जी** की अध्यक्षता में हुआ, जिसमें 190 सदस्य उपस्थित थे। गायत्री मंत्र के उच्चारण से बैठक आरम्भ हुई ।

सर्वप्रथम गत तीन वर्षों में दिवंगत हुए आर्य सदस्यों को श्रद्धांजलि देते हुए एक मिनट के मौन के बाद, पुनः गायत्री मंत्र से बैठक आरम्भ हुई । विगत 22 जून, 2014 को हुई बैठक की कार्यवाही महामंत्री महोदय ने पढ़कर सुनाई, जिसकी सम्पुष्टि सभा ने सर्वसम्मति से कर दी।

महामंत्री श्री सतीश चड्डा ने

उपस्थित आर्यजनों का स्वागत करते हुए वार्षिक विवरण 01 अप्रैल 2014 से 31 मार्च 2017 को प्रस्तुत किया। इन सभी आयोजनों में सभी आर्य संस्थाओं व आर्य समाजों के अधिकारियों और सदस्यों की व्यक्तिगत भागीदारी होती है अतः आप सबका तथा सभी आर्य संस्थाओं के पदाधिकारियों का धन्यवाद किया। अनेक सदस्यों ने इस कार्य विवरण पर प्रसन्नता व्यक्त की तथा कार्यकर्ताओं द्वारा तन-मन-धन से की गई सेवा के लिए धन्यवाद किया। विवरण की प्रतियां सभी प्रतिनिधियों को प्रवेश द्वार पर ही दे दी

– शेष पृष्ठ 5 पर

वेद-स्वाध्याय

सच्चा रक्षक जगदीश्वर

तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्।
पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।। -ऋ. 1/89/5
ऋषिः गोतमो राहूगणपुत्रः।। देवताः विश्वेदेवाः।। छन्दः निचृज्जगती।।

शब्दार्थ - **तम्** = उस **जगतः तस्थुषः पतिम्** = जंगम और स्थावर संसार के पति **धियं जिन्वम्** =बुद्धि व कर्म के प्रीणन करने वाले **ईशानम्** = ईश्वर को **वयम्** = हम **अवसे हूमहे** = रक्षा के लिए पुकारते हैं। **पूषा** = वह पोषक **यथा** = जहां **नः** = हमारे **वेदसाम्** = धनों की **वृधे** =वृद्धि के लिए **असत्** = हुआ है वहां वही **स्वस्तये** = हमारे कल्याण के लिए **अदब्धः रक्षिता पायुः** = (हमारे धनों का) अहिंसित रक्षक और पालक भी होवे।

विनय - इस विषम संसार में हम जब किसी क्लेश में होते हैं तो रक्षा के लिए जगदीश्वर को ही पुकारते हैं। वह जगदीश्वर इस सब ब्रह्माण्ड का ईश्वर है। स्थिर, अस्थिर, चर, अचर जो भी कुछ संसार है उस सबका वही पति है, वही स्वामी है। उसके सिवाय संसार में और दूसरा कौन रक्षा कर सकता है? और वह 'धियंजिन्व' ईश्वर रक्षा के लिए आता भी है। वह कोई हमारे जैसा हाथ-पैर वाला साकार तो है नहीं जिसे चलकर हमारे पास पहुंचना हो और अपने हाथों से हमारी रक्षा करनी हो। वह सर्वगत हमारी बुद्धि या कर्म के प्रीणन करने द्वारा हमारी रक्षा कर देता है। वह प्रभु जो ''सर्वगत हमारी बुद्धि या कर्म के प्रीणन करने द्वारा हमारी रक्षाकर देता है। वह प्रभु जो ''सर्वभूतों हमारी बुद्धि या कर्म के प्रीणन करने द्वारा हमारी रक्षा कर देता है। वह प्रभु जो ''सर्वभूतों के हृद्देश में बैठा हुआ सबको घुमा रहा है' हमारी बुद्धि को ठीक ज्ञान देकर, हमसे ठीक काम कराकर हमारी रक्षाकर देता है। बुद्धि व कर्म के अधूरे रहने से ही मनुष्य सदा कष्ट में पड़ता है। जगदीश्वर उसे किसी-न-किसी ढंग से तृप्त करके पूरा कर देता है। अपनी या अपने किसी साथी की समझ बदल जाती है वा उससे ऐसा कर्म हो जाता है कि विपत्ति कल्याण के रूप में परिणत हो जाती है, प्रभु हमें बचा लेता है।

यदि वह न बचाएगा तो और कौन बचाएगा? वह पूषा है तोवही हमारा 'रक्षिता पायु' भी होगा।जैसे उसने हमारे लिए इस जगत् में ये इतने ऐश्वर्य बढ़ाए हैं- यह शरीर, मन, बुद्धि आदि देकर इस ऐश्वर्य -जगत् को हमारे सामने रख दिया है, वैसे ही जब कभी इस संसार में हम संकट में पड़ जायेंगे और हमारे प्राप्त ऐश्वर्यों में से कोई नष्ट हो रहा होगा तो वही (यदि इनकी रक्षा में हमारी स्वस्ति देखेगा) इनकी पूर्ण रक्षा भी करेगा। उसके दिये हुए धनों की रक्षा भी वही करेगा। हमें क्या चिन्ता? और जब वह हमारी स्वस्ति (कल्याण) के लिए हमारे प्राप्त ऐश्वर्य (धन, शरीर आदि) की रक्षा करने की आवश्यकता समझता है, अर्थात् इनकी रक्षा में ही हमारा वास्तविक कल्याण देखता है तब वह रक्षा करता है, अवश्य रक्षा करता है और उसकी यह रक्षा पूर्ण 'अदब्ध' होती है, उसकी रक्षाओं को संसार में कौन रोक सकता है? अतएव हम सदा उस 'धियंजिन्व को, उस 'अदब्ध रक्षिता' को रक्षा के लिए पुकारते हैं।

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

ताजमहल एक विरासत या कलंक

...अब ताजमहल एक खुबसूरत विरासत है या बदसूरत इतिहास। आखिर इसे आस्था के प्रकाश में देखे या प्यार के महल के रूप में किन्तु प्रो. ओक को गलत या सही सिद्ध करने का केवल एक ही रास्ता है कि इसके बन्द कमरों को संयुक्त राष्ट्र के पर्यवेक्षण में खुलवाए और अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञों को छानबीन करने दें। ...

हाल ही में उत्तर प्रदेश के सरधना से विधायक संगीत सोम ने कहा है कि बहुत-से लोग इस बात से चिंतित हैं कि ताजमहल को यूपी टूरिज्म बुकलेट में से ऐतिहासिक स्थानों की सूची से हटा दिया गया। किस इतिहास की बात कर रहे हैं हम? जिस शख्स (शाहजहां) ने ताजमहल बनवाया था, उसने अपने पिता को कैद कर लिया था। वह हिन्दुओं का कत्लेआम करना चाहता था। अगर यही इतिहास है तो यह बहुत दु:खद है, संगीत सोम ने आगे कहा कि मुगल बादशाह बाबर, औरंगजेब और अकबर गद्दार हैं और ताजमहल एक कलंक है।

हालाँकि इससे पहले वर्ष 2015 में भारत सरकार ने इस दावे को खारिज कर दिया था कि ताजमहल कभी हिन्दू मंदिर था। तब केंद्रीय संस्कृति मंत्री महेश शर्मा ने कहा था कि सरकार को ताजमहल के हिन्दू मंदिर होने के दावे से जुड़ा कोई सबूत नहीं मिला है। जबकि आगरा के छह वकीलों ने उसी दौरान अदालत में एक याचिका दायर की थी जिसमें कहा गया था कि ताजमहल एक समय में हिन्दुओं का शिव मंदिर था और इसे हिन्दुओं को सौंप दिया जाना चाहिए।

कहते हैं ताजमहल को 17वीं सदी में शहजहां ने अपनी पत्नी मुमताज महल की याद में बनवाया था। मुमताज महल की मौत अपनी 14वीं संतान को जन्म देते हुए हो गई थी और ताजमहल मुमताज का मकबरा है। इतिहास के पन्नों में लिखा है कि ताजमहल को शाहजहां ने मुमताज के लिए बनवाया था। वह मुमताज से प्यार करता था। दुनिया भर में ताजमहल को प्रेम का प्रतीक माना जाता है, लेकिन कुछ इतिहासकार इससे दोराय रखते हैं। उनका मानना है कि ताजमहल को शाहजहां ने नहीं बनवाया था वह तो पहले से बना हुआ था। उसने इसमें हेर-फेर करके इसे इस्लामिक लुक दिया था। हालाँकि दुनिया भर में मशहूर ताजमहल को देखने हर रोज करीब 12 हजार पर्यटक पहुंचते हैं और इस खुबसूरत बेजोड़ स्मारक ताजमहल को 1983 में यूनेस्को ने विश्व विरासत घोषित किया।

ताजमहल एक मकबरा है या एक मंदिर सबके अपने-अपने दावे और राय हैं यह विश्व विरासत है या कलंक इस पर बहस जारी है। लेकिन कुछ सवाल जरूर हैं जिन पर चर्चा होनी चाहिए क्योंकि जिस प्रकार मध्यकाल में प्राचीन भवन, धार्मिक स्थल, महल और किले तोड़े गये उन्हें नवीन आकार दिया गया तो क्या गारंटी है कि इस तोड़फोड़ से इतिहास अछुता रहा हो? बस यह है कि परिस्थिति वश कई बार लोग किसी झूठ को भी सत्य स्वीकार कर लेते हैं। इतिहासकार पुरुषोत्तम नागेश ओक ने अपनी किताब में लिखा है कि ताजमहल के हिन्दू मंदिर होने के कई सबूत मौजूद हैं।

वह लिखते हैं कि मकबरे के मुख्य गुम्बद के किरीट पर जो कलश है वह हिन्दू मंदिरों की तरह है। यह शिखर कलश शुरू में स्वर्ण का था और अब यह कांसे का बना है। आज भी हिन्दू मंदिरों पर स्वर्ण कलश स्थापित करने की परम्परा है। दूसरा इस कलश पर चंद्रमा बना है। अपने नियोजन के कारण चन्द्रमा एवं कलश की नोक मिलकर एक त्रिशूल का आकार बनाती है, जोकि हिन्दू भगवान शिव का चिह्न है। इसका शिखर एक उल्टे रखे कमल से अलंकृत है। यह गुम्बद के किनारों को शिखर पर सम्मिलन देता है। उसके मध्य दंड के शिखर पर नारियल की आकृति बनी है। नारियल के तले दो झुके हुए आम के पत्ते और उसके नीचे कलश दर्शाया गया है। उस चंद्राकार के दो नोक और उनके बीचोबीच नारियल का शिखर मिलाकर त्रिशूल का आकार बना है। हिन्दू और बौद्ध मंदिरों पर ऐसे ही कलश बने होते हैं।

इतिहास में पढ़ाया जाता है कि ताजमहल का निर्माण कार्य 1632 में शुरू हुआ था और लगभग 1653 में इसका निर्माण कार्य पूर्ण हुआ। अब सोचिए कि जब मुमताज का इंतकाल 1631 में हुआ तो फिर कैसे उन्हें 1631 में ही ताजमहल में दफना दिया गया, जबकि ताजमहल तो 1632 में बनना शुरू हुआ था।

दरअसल 1632 में हिन्दू मंदिर को इस्लामिक लुक देने का कार्य शुरू हुआ। 1649 में इसका मुख्य द्वार बना जिस पर कुरान की आयतें तराशी गईं। इस मुख्य द्वार के ऊपर हिन्दू शैली का छोटे गुम्बपद के आकार का मंडप है और अत्यंत भव्य प्रतीत होता है। ओक की पुस्तक के अनुसार ताजमहल के हिन्दू निर्माण का साक्ष्य देने वाले काले पत्थर पर उत्कीर्ण एक संस्कृत शिलालेख लखनऊ के वास्तु संग्रहालय में रखा हुआ है। यह सन् 1155 का है। हिन्दू मंदिर प्राय: नदी या समुद्र तट पर बनाए जाते हैं। ताज भी यमुना नदी के तट पर बना है, जोकि शिव मंदिर के लिए एक उपयुक्त स्थान है। शिव मंदिर में एक मंजिल के ऊपर एक और मंजिल में दो शिवलिंग स्थापित करने का हिन्दुओं में रिवाज था, जैसाकि उज्जैन के महाकालेश्वर मंदिर और सोमनाथ मंदिर में देखा जा सकता है।

ताज के दक्षिण में एक प्राचीन पशुशाला है। वहां पर तेजोमहालय की पालतू गायों को बांधा जाता था। जबकि मुस्लिम कब्रिस्तान में गौशाला होना एक असंगत बात है। ताजमहल में चारों ओर चार एक समान प्रवेशद्वार हैं, जोकि हिन्दू भवन निर्माण का एक विलक्षण तरीका है जिसे कि चतुर्मुखी भवन कहा जाता है। ताजमहल में ध्वनि को गुंजाने वाला गुम्बद है। हिन्दू मंदिरों के लिए गूंज उत्पन्न करने वाले गुम्बजों का होना अनिवार्य है। ताजमहल के गुम्बज में सैकड़ों लोहे के छल्ले लगे हुए हैं जिस पर बहुत ही कम लोगों का ध्यान जा पाता है। इन छल्लों पर मिट्टी के आलोकित दीये रखे जाते थे जिससे कि संपूर्ण मंदिर आलोकमय हो जाता था।

यदि इस विवाद में मूल में जाये तो ओक कि खोज ताजमहल के नाम से प्रारम्भ होती है। वह लिखते हैं कि ''महल'' शब्द अफगानिस्तान से लेकर अल्जीरिया तक किसी भी मुस्लिम देश में भवनों के लिए प्रयोग नहीं किया जाता। इसके बाद इसका वैदिक शैली में निर्मित गलियारा, प्रवेश द्वार पर बने लाल कमल, पीछे की खिड़कियाँ और बंद दरवाजे, मकबरे के पास संगीतालय जिसकी मजहब ए इस्लाम कतई इजाजत नहीं देता है। इसके बाद दीवारों पर बने हुए फूल जिनमें छुपा हुआ है ओ३म् (ॐ)संगमरमर की सीढ़ियाँ चढ़ने के पहले जूते उतारने की परम्परा शाहजहां के समय से भी पहले की थी जब ताज शिव मंदिर था। यदि ताज का निर्माण मकबरे के रूप में हुआ होता तो जूते उतारने की आवश्यकता ही नहीं होती क्योंकि किसी मकबरे में जाने के लिये जूता उतारना अनिवार्य नहीं होता। देखने वालों ने अवलोकन किया होगा कि तहखाने के अंदर कब्र वाले कमरे में केवल सफेद संगमरमर के पत्थर लगे हैं जबकि अटारी व कब्रों वाले कमरे में पुष्प लता आदि से चित्रित पच्चीकारी की गई है। इससे साफ जाहिर होता है कि मुमताज के मकबरे वाला कमरा ही शिव मंदिर का गर्भगृह है।

अब ताजमहल एक खुबसूरत विरासत है या बदसूरत इतिहास। आखिर इसे आस्था के प्रकाश में देखे या प्यार के महल के रूप में किन्तु प्रो. ओक को गलत या सही सिद्ध करने का केवल एक ही रास्ता है कि इसके बन्द कमरों को संयुक्त राष्ट्र के पर्यवेक्षण में खुलवाए और अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञों को छानबीन करने दें। या फिर इतिहास के हजारों दर्द की भांति इसे भी ऐसे ही पी जाये?

-सम्पादकीय

प्रथम पृष्ठ का शेष

प्रेम के नाम पर पाकिस्तान का नया जाल

...पाकिस्तान किसी भी प्रकार से जिहाद के लिए भारत में अपनी आतंकवादी गतिविधियों से पीछे हटना नहीं चाहता। वह हमारे देश को हजार घाव देने की मानसिकता से बाहर निकलना नहीं चाहता इसलिए वह अपनी गुप्तचर संस्था आई एस आई को सक्रिय किये रखता है। इसके लिए उसने अब सबसे आसान राह चुनी और वह है प्रेमजाल क्योंकि अब यहाँ युवक और युवतियां खुद को आधुनिक दिखाने के साथ पुरानी परम्पराओं से बचते दिखाई दे रहे हैं।...

आधुनिकता का सीधा सा अर्थ है गहन सांस्कृतिक परिवर्तन, जिसमें कुछ पुराना त्यागने के साथ कुछ नया पकड़ना होता है जैसे रहन-सहन, पारम्परिक रीति-रिवाज के साथ अपने स्वयं के मूल्यों के अनुसार रहने के लिए स्वतंत्र स्वतंत्रता की स्थापना, अपने वर्तमान और भविष्य आदि को लेकर खुद फैसले लेना आदि।

दूसरा आधुनिकता सभी को व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के साथ किसी सत्य को आगे बढ़ाने में व्यक्ति को सशक्त बनाने, विश्वास करने, पढ़ने, लिखने, बोलने, संदेह, प्रश्न, तर्क करने और किसी भी विचार को खंडित करने का अधिकार देती है। किन्तु क्या आज के समाज में कोई ऐसा भी है जो अभी भी इस पर विश्वास करता है कि हम आधुनिकता के नाम पर पूरी तरह से आधुनिक परिभाषा के शब्दों के जाल में फंसकर अपने हाथों से अपने भविष्य का गला दबा रहे हैं?

हाल ही में समाचार पत्रों के माध्यम से सुरक्षा एजेंसियों द्वारा जो रिपोर्ट सामने आई है वह बेहद चौंकाने वाली है। न्यूज वेबसाइट के अनुसार पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आईएसआई भारत में जासूसी के लिए अपने एजेंट्स को हनी ट्रैप की ट्रेनिंग देकर भेज रही है। उसका मकसद यहां की लड़की से शादी कराके अपने एजेंट को भारत की नागरिकता दिलाना है, ताकि उस पर शक न हो। ताजा मामला जालंधर से पकड़े गए पाकिस्तानी एजेंट एहसान उल हक का सामने आया है। उसने फेसबुक पर दोस्ती फिर प्यार का नाटक करके भारतीय लड़की से जुलाई 2012 को शादी कर ली थी। शादी गांव कोटकलां में पंजाबी रीति रिवाज से की थी। वह दुल्हा बनकर बाकायदा पगड़ी बांधकर आया था लेकिन उस पर शक तब हुआ, जब उसने खुद को भारतीय बताकर आधार और पैन कार्ड बनवाया, फिर अलीपुर कॉलोनी में कोठी बनवा ली। लेकिन गिरफ्तारी होते ही पता चला वह पाक नागरिक है। जबकि इससे पहले भी जालंधर और फिरोजपुर में ऐसे ही 2 केस सामने आ चुके हैं।

दूसरा मामला 24 वर्षीय राजौल्लाह का है जिसे 2 अगस्त 2010 को फिरोजपुर पुलिस ने पकड़ा था। वह आईएसआई एजेंट था और नेपाल से इंडिया में आया था। उसने यहाँ आकर हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी में कैटरिंग का काम शुरू किया। लोग उसे राकेश कुमार के नाम से बुलाते थे। उसने वोटर आई कार्ड, ड्राइविंग लाइसेंस तक बनवा रखे थे। वह बड़े आराम से आर्मी एरिया में बुलेट पर घूमता था। उसके चक्कर में तीन लड़कियां फंसी थीं। तीसरी को पता चल गया था कि राकेश का दो और लड़कियों से अफेयर है। उसकी प्रेमिका ने ही पुलिस को सूचना दी थी। जब वह पकड़ा गया तो खुलासा हुआ कि वह पाकिस्तानी है और आईएसआई के लिए जासूसी करता था।

उसी दौरान जालंधर के वर्कशॉप चौक के पास 21 अगस्त 2010 को पाकिस्तानी मोहम्मद आलम को पकड़ा था। वह यहां गोलगप्पे बेचने की आड़ में जासूसी कर रहा था। पकडे जाने पर आलम ने माना था कि उन्हें ट्रेनिंग में सिखाया जाता है कि कैसे भारतीय लड़की को प्यार में फंसाकर शादी करनी है। ऐसा करके वे पासपोर्ट जैसे अहम दस्तावेज बनवा सकते हैं। आलम 2006 में नेपाल से भारत आया था। जालंधर में उसने सब्जी बेचने वाले जितेंद्र सिंह से दोस्ती की। नाम ठाकुर अमरदास बताया। फिर जितेंद्र की शादीशुदा बहन प्रिया सिंह से शादी कर ली।

इससे यह तो स्पष्ट ही होता है कि पाकिस्तान किसी भी प्रकार से जिहाद के लिए भारत में अपनी आतंकवादी गतिविधियों से पीछे हटना नहीं चाहता। वह हमारे देश को हजार घाव देने की मानसिकता से बाहर निकलना नहीं चाहता इसलिए वह अपनी गुप्तचर संस्था आई एस आई को सक्रिय किये रखता है। इसके लिए उसने अब सबसे आसान राह चुनी और वह है प्रेमजाल क्योंकि अब यहाँ युवक और युवतियां खुद को आधुनिक दिखाने के साथ पुरानी परम्पराओं से बचते दिखाई दे रहे हैं। मतलब वर्तमान आधुनिकता और स्वतन्त्रता की सीधी सी परिभाषा यह बना दी गयी है कि माता-पिता रिश्तेदारों के विपरीत जाना ही आधुनिकता और स्वतन्त्रता कहलाई जाती है और युवा इसका अक्षरश: पालन भी करता दिखाई दे रहा है।

विडम्बना देखिये! उपरोक्त सभी मामलों में लड़की पक्ष ने लड़की के प्रेम के सामने झुककर लड़के की पारिवारिक सामाजिक प्रष्ठभूमि को भी नहीं तलाशा! दरअसल आज भारत में आधुनिकता की दौड़ चल रही है इसमें युवा तबका बड़ी तेजी के साथ भाग ले रहा है। बुद्धिजीवियों का बड़ा वर्ग इस आधुनिकता को उचित ठहराने के साथ-साथ इसे युवाओं का मौलिक अधिकार भी मानता है। इसमें चाहें लिव-इन रिलेशनशिप हो या प्रेम

बोध कथा

मन को वश में रखो

बहुत वर्षों की बात है। मैं तब छोटा था, परन्तु मैं नहीं, यह शरीर छोटा था। मैं तो सदा एक-सा रहता हूं। यह शरीर ही घटता-बढ़ता रहता है।

मैं था अपने गांव 'जलालपुर जट्टां' में। इसके निकट ही महन्तों का एक बाग था। मैं गांव से इस बाग की ओर जा रहा था। मार्ग में एक बहुत बड़ा जोहड़ आता था, जिसे मुसद्दीवाना कहते थे। यह जोहड़ अभी कुछ दूरी पर था कि पीछेसे शोर सुनाई दिया। मैंने मुड़कर देखा-गांव के एक मुसलमान चौधरी घोड़े पर चिपके बैठे थे और घोड़ा सरपट दौड़ा आता था। कुछ लोगों ने घोड़ा रोकने का प्रयत्न भी किया, पर वह रुका नहीं। चौधरी जी को मैं जानता था। ऊंची आवाज़ में पूछा-''चौधरी जी! इतनी तेज़ी से कहां जा रहे हो?''

चौधरी जी घोड़े से चिपटे-चिपटे बोले-''इस घोड़े को पता है, मुझे नहीं। मुझे तो गुजरात जाना है।''

मैंने आश्चर्य से सोचा कि गुजरात तो हमारे गांव के दक्षिण में है। चौधरी जी उत्तर की ओर क्यों भागे जाते हैं? तभी घोड़ा पहुंचा मुसद्दीवाना के पास। शायद सामने से कोई वस्तु दिखाई दी थी उसे। वह ज़ोर से उछला। मैं भी चौधरी साहब के पास मुसद्दीवाना में जल्दी से भागकर पहुंचा। चौधरी जी पर्याप्त संघर्ष के पश्चात् रकाब से अपना पांव छुड़ाने में सफल हो गये थे। जोहड़ के कीचड़ में लथपथ थे। उनकी पगड़ी परे तैर रही थी। घोड़ा दूसरी ओर जा रहा था और चौधरी जी कीचड़ में रंगे-रंगाये बाहर आने का प्रयत्न कर रहे थे। तब पता लगा कि वे गुजारत की कचहरी में उपस्थित होने के लिए घर से निकले थे। गुजरात की कचहरी में पहुंचने की बजाय उस जोहड़ में पहुंच गये, क्योंकि घोड़ा वश में नहीं रहा।

यही दशा होती है घोड़े के वश में न रहने से! सुनो, सुनो, सुनो! इस घोड़े (मन) को वश में रखो, नहीं तो भगवान् की कचहरी में पहुंचने के स्थान पर यह आपको पाप के कीचड़ में पहुंचा देगा। पगड़ी अलग उतरेगी, कपड़े अलग खराब होंगे और उधर यदि समय पर नहीं पहुंचे तो कचहरी में मुकद्दमा ख़ारिज हो जाएगा-

मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।
पार ब्रह्म को पाइये, मन के ही प्रतीत।।

साभार : बोध कथाएं

बोध कथाएँ: वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

प्रेरक प्रसंग

महात्मा नारायण स्वामी जी द्वारा लिखित एक घटना

सन् 1935 में क्वेटा (बलोचिस्तान) में एक भीषण भूकम्प आया था। इसमें सहस्त्रों व्यक्ति मर गये थे। इस भूकम्प से कुछ समय पूर्व क्वेटा से एक 23 वर्षीय देवी ने श्री महात्मा नारायण स्वामीजी को एक पत्र लिखा। उस देवी को किसी ज्योतिषी ने यह बतलाया था कि वह एक वर्ष के भीतर मर जाएगी। उस देवी ने महात्माजी से यह पूछा था कि क्या सचमुच वह एक वर्ष के भीतर मर जाएगी। पत्र पढ़कर महात्माजी के अन्त: करण में यह ईश्वरीय प्रेरणा हुई कि उसे लिख दें कि वह नहीं मरेगी। महात्माजी ने दिल्ली से उसे लिख दिया कि वह चिन्ता न करें।

भूकम्प से पूर्व महात्माजी क्वेटा गये। वह देवी अपने पति के साथ श्री महाराज के दर्शन करने पहुँची और पुन: वही प्रश्न किया। अभी ज्योतिषीजी की बतलाई अवधि पूरी नहीं हुई थी। उसका चेहरा मुरझाया हुआ था। महात्माजी ने पुन: बलपूर्वक कहा कि वह कोई चिन्ता न करे। वह नहीं मरेगी। उसका चेहरा खिला उठा। उसे बड़ी सान्त्वना मिली।

क्वेटा का भूकम्प आया। इसमें सहस्त्रों मनुष्य कीट-पतंग की भाँति मर गये। क्वेटा के भव्य-भवन भूमि पर बिछ गये। सारा संसार क्वेटा के भूकम्प की दिल दहला देने वाली कहानियाँ सुनकर काँप उठा। इस भूकम्प से पूर्व ही ज्योतिषीजी का बतलाया हुआ समय एक वर्ष पूरा हो गया। भूकम्प के पश्चात् उस देवी का महात्माजी को पत्र प्राप्त हुआ कि वह ज्योतिषीजी के बतलाये हुए समय के भीतर नहीं मरी और विनाशकारी भूकम्प में कितने प्राणी मर गये हैं, कितनों को चोटें आई हैं-इसमें भी वह बच गई है। महात्मा जी ने पत्र पाकर देवीजी को उस ज्योतिषी के प्रहार से बचने पर बधाई दी और ईश्वर को अनेक धन्यवाद दिये, ''जिसकी कृपा से, मेरे अन्त: करण ने मुझे शुद्ध प्रेरणा की।''

न जाने ऐसी अनर्गल भविष्य वाणियाँ करके ज्योतिषी लोग कितने जनों को ठग लेते हैं और कितनों का अहित करते हैं! ***साभार : तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी***

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

प्रथम पृष्ठ का शेष

महर्षि दयानन्द सरस्वती का 134वां निर्वाणोत्सव सम्पन्न .....

के साथ 'ओ३म्' ध्वजारोहण के साथ किया गया। श्रीमती आरती व श्री जोगेन्द्र खट्टर, श्रीमती अनिता व श्री प्रवीण वधवा, श्रीमती सुधा व श्री विद्यासागर वर्मा तथा श्रीमती कान्ता व श्री जितेन्द्र आर्य यजमान के रूप में उपस्थित थे। यज्ञ संयोजन श्री मदनमोहन सलूजा एवं श्री कवंरभान खेत्रपाल ने किया। इस अवसर पर श्री धीरज कान्त व साथियों ने मधुर व प्रेरणापद प्रभु भक्ति व महर्षि को श्रद्धासुमन से युक्त भजनों से आर्यजनों का मन मोह लिया।

वैदिक विद्वान् व मुख्य वक्ता डा. महेश विद्यालंकार जी ने अपने उद्बोधन में निर्वाण शब्द की विस्तृत व्याख्या की व ऋषि के जीवन पर प्रकाश डाला। डॉ. महेश ने कहा ''दुनिया के किसी भी मंदिर में प्रात: काल यज्ञ नहीं किया जाता। रामायण की कथा होती है, पुराणों की कथा होती है, महाभारत की कथा होती है लेकिन वेद की कथा किसी भी मन्दिर में नहीं की जाती। आज हमारे समाज में धार्मिकता, आध्यात्मिकता, नैतिकता घटती जा रही है इसलिए वेदों की ओर लौटना बहुत जरूरी है। आर्य समाज वेदों का ज्ञाता है। आज भी सर्वोत्तम विचारधारा का धनी आर्य समाज है। आर्य समाज ने जिस विचारधारा का दिया जलाया था उसे कदापि बुझने नहीं देना है। ऋषि ने हमें बहुत कुछ दिया है हमने उस दी हुई सम्पदा को सम्भालकर रखना है।'' आर्य विद्या परिषद् प्रस्तोता श्री सुरेन्द्र रैली जी ने यज्ञ पर हुए शोध से प्रदूषण के कम होने सम्बन्धी परिणामों की व्याख्या की।

वैदिक वैज्ञानिक विद्वान् आचार्य सनत् कुमार जी ने यज्ञ पर किये गये शोधकार्यों से अवगत कराया। आचार्य सनत् कुमार जी ने कहा ''हमें सरकार के सामने यह प्रस्ताव रखना चाहिए कि जिस प्रकार योग दिवस मनाया जाता है उसी प्रकार वर्ष में एक दिन अन्तर्राष्ट्रीय यज्ञ दिवस मनाया जाए।'' स्वामी प्रवणानन्दजी ने अपना आशीर्वाद देते हुए कहा कि हम सबने तो ऋषि के जीवन के विषय में निर्वाण दिवस के विषय में यहां आकर विद्वानों से काफी कुछ सुना समझा लेकिन हमारे जो बच्चे आज छुटट्ी के दिन घरों में खेल रहे हैं दिवाली मना रहे हैं उन्हें आज घर जाकर निर्वाण दिवस के विषय में स्वामी दयानन्द जी के विषय में दीपावली के महत्त्व के विषय में जरूर बताएं तभी वे बच्चे स्वामी जी द्वारा बताये मार्ग पर चलना सीख सकेंगे उनके आदर्शों को अपने जीवन में अंगीकार कर सकेंगे।''

सभा प्रधान एवं एम.डी.एच. ग्रुप चेयरमैन महाशय धर्मपाल जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि हमारे ऊपर महर्षि की बहुत बड़ी कृपा रही है। उन्हीं के आशीर्वाद व प्रेरणा से मैं आर्य समाज की सेवा में सक्षम हुआ हूं आप हमें आशीर्वाद देते रहें जिससे मैं आर्य समाज के कार्यों को आगे बढ़ाता रहूं।'' महाशय जी ने आर्य चैनल खोलने के विषय में ध्यानाकर्षित करते हुए कहा कि ''अभी आर्य समाज का चैनल खोलने में समय लगेगा लेकिन उसके पहले एक मीडिया सेन्टर खोलने का कार्य तत्काल प्रभाव से प्रारम्भ किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए बर्मा में गुरुकुल खोलने में जो भी धन व्यय होगा वह एम.डी. एच. की ओर से किया जाएगा आप लोग कार्य प्रारम्भ करें।'' कार्यक्रम में श्री विद्यासागर वर्मा कृत योगदर्शन की काव्य रचना पर आधारित सी.डी. व श्री सतीश आर्य द्वारा अंग्रेजी अनुवाद योगदर्शन एवं डॉ. महेश विद्यालंकार जी द्वारा रचित पुस्तिका मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का लोकार्पण किया गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा महामंत्री श्री विनय आर्य ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए 'सहयोग' टीम के कार्यकर्ताओं का परिचय कराया व सभी से अपील की कि वे अपनी अनावश्यक वस्तुएं सहयोग को दान करें जिससे वे वस्तुएं जरूरतमंद व्यक्तियों तक पहुंचाई जा सकें। श्री विनय आर्य ने सूचना देते हुए बताया कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के संयोकत्व में वेद रिचर्स फाउन्डेशन कालीकट में दिनांक 23 जनवरी से 31 जनवरी, 2018 के बीच स्वाध्याय एवं भ्रमण का कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है जिसके संयोजक श्री शिव कुमार मदान जी है जो महानुभाव इस कार्यक्रम में जो जाना चाहें वे श्री मदान जी से सम्पर्क कर सकते हैं। श्री विनय आर्य ने यह भी कहा कि आज ये आयोजन तभी सफल माना जा सकता है जब हम आज शाम पटाखे न चलाते हुए अपने-अपने घरों के बाहर यज्ञ करें। यही महर्षि दयानन्द सरस्वती जी को हम सब की सच्ची श्रद्धांजलि होगी और दीपावली बनाने की सार्थकता सिद्ध होगी।

134वें निर्वाण दिवस पर सम्बोधित करते डॉ. महेश विद्यालंकार जी, श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी, स्वामी प्रणवानन्द जी, आचार्य सनत कुमार जी, श्री सुरेन्द्र रैली एवं श्री विनय आर्य। समारोह का शुभारम्भ ध्वजारोहण के साथ हुआ - ध्वजारोहण करते सुप्रसिद्ध समाजसेवी श्री सतपाल भरारा जी एवं आर्य महानुभाव।

अंग्रेजी अनुवादित पुस्तक पतंजलि योग दर्शन का विमोचन करते महाशय धर्मपाल जी, साथ में श्री धर्मपाल आर्य जी, श्री राजेन्द्र दुर्गा जी, श्री विद्यामित्र ठुकराल जी एवं अनुवादक श्री सतीश आर्य।

इस अवसर पर गुरुकुल तिहाड़ ग्राम के विद्यार्थियों द्वारा भव्य प्रस्तुति

शेष पृष्ठ 8 पर

प्रथम पृष्ठ का शेष

महाशय धर्मपाल सर्वसम्मति से पुनः प्रधान निर्वाचित

गई थी। महामंत्री ने जानकारी दी कि उपरोक्त आयोजनों की सूचना विभिन्न राष्ट्रीय व दैनिक समाचार पत्रों में **एम. डी. एच. परिवार** तथा **आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट** की ओर से प्रकाशित करवाई गई, हम उनका धन्यवाद करते हैं। स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस की विशाल शोभा यात्रा में दिसम्बर 2016 को विभिन्न विद्यालयों की ओर से 9 झांकियां अलग-अलग विषयों में शामिल हुई, उन विद्यालयों के पदाधिकारियों का बहुत-बहुत धन्यवाद करते हैं। महामंत्री ने प्रस्ताव रखा कि आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य (पं.) की ओर से पूर्व महामंत्री श्री राजीव आर्य जी की स्मृति में प्रति वर्ष एक अधिकारी के सम्मान हेतु ग्यारह हजार का पुरस्कार देने का प्रस्ताव रखा जिसे सर्व सम्मति से पारित कर दिया गया।

कोषाध्यक्ष श्री अरुण प्रकाश वर्मा जी ने सदस्यों को आय-व्यय विवरण 2013-14, 14-15, 15-16 तथा 16-17 की जानकारी दी जोकि वार्षिक विवरण में ही प्रकाशित की गई थी, सार रूप में उन्होंने सभी सदस्यों को बताया कि स्थिर निधियां (एफ. डी. आर.) जो मार्च 2014 में लगभग 9.5 लाख की थी वह मार्च 2017 में लगभग 34 लाख की हो गई जिसमें मुख्य रूप से महाशय धर्मपाल जी का योगदान है। सभी सदस्यों ने करतल ध्वनि से दानदाताओं का धन्यवाद करते हुए आय-व्यय विवरण को पारित कर दिया। इस पर सभी ने कोषाध्यक्ष महोदय का धन्यवाद करते हुए हर्ष व्यक्त किया।

श्री जगदीश मलिक जी ने सुझाव दिया कि आय-व्यय विवरण हिन्दी में होना चाहिए। महामंत्री ने उनको तथा अन्य सदस्यों को आश्वस्त किया कि आगे से ऐसा ही होगा। **श्री सुरेन्द्र कुमार रैली जी** ने कहा कि गत वर्षों में आर्य केन्द्रीय सभा के आयोजनों में बहुत सुन्दर बदलाव व मनमोहकता बढ़ गई है तथा कार्यक्रमों की व्यवस्था प्रशंसनीय रही है इसमें बहुत बढ़ा योगदान हमारे प्रधान जी का ही झलकता है। **श्री जोगेन्द्र खट्टर जी** ने विचार व्यक्त किये कि कार्यक्रम और सुन्दर व नये विचारणीय विषयों पर केन्द्रित होने चाहिए। कार्यक्रमों में जो प्रगति हुई है उसमें बहुत बड़ा हाथ और नेतृत्व महाशय धर्मपाल जी का ही है, क्योंकि उनका व्यक्तिगत अनुभव व जानकारी महत्त्वपूर्ण है।

विभिन्न सदस्यों द्वारा गत वर्षों में हुए आयोजनों की सुन्दरता, प्रगति, मोहकता और महर्षि द्वारा स्थापित आर्य समाज व सत्य सनातन वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में आई तेजी पर प्रसन्नता व्यक्त की तथा इन सबके लिए प्रधान महाशय धर्मपाल जी के नेतृत्व को श्रेय दिया गया। सभी सदस्यों ने जोरदार तालियां बजाई और उनका साधुवाद किया।

सभा की मजबूती हेतु महाशय धर्मपाल जी की ओर 16 लाख सहित लगभग 35 लाख रुपये की स्थिर निधि की घोषणाएं

साधारण अधिवेशन में वार्षिक रिपोर्ट का वाचन करते महामन्त्री श्री सतीश चड्ढा

त्रैवार्षिक साधारण सभा अधिवेशन में प्रधान पद के लिए महाशय धर्मपाल जी का नाम प्रस्तुत किए जाने पर सर्वसम्मति से अनुमोदन करते आर्यजन

श्री विनय आर्य जी महामंत्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने सदस्यों को बताया कि राष्ट्रीय समाचार पत्रों में पूरे, आधे व चौथाई पृष्ठों पर कार्यक्रमों की सूचना व विषयों की जानकारी के प्रकाशन पर लगभग 9 लाख प्रति कार्यक्रम व्यय हुआ तथा कार्यक्रमों की रिकॉर्डिंग तथा टीवी टैलीकास्ट पर ढाई लाख प्रति कार्यक्रम व्यय आता है। इस तरह लगभग 12-15 लाख रुपये एक कार्यक्रम का व्यय है। आर्य केन्द्रीय सभा तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा वर्ष में 6 मुख्य आयोजन करता है। अब आप सभी सदस्य विचार कीजिए कि इतनी बड़ी व्यय की गई राशि कब तक हम दानरूप में महत्त्वपूर्ण व दानी महानुभावों से लेते रहेंगे। हमारा प्रयास होना चाहिए कि हमारी दोनों सभाएं इतनी सक्षम हो जाएं कि यह व्यय वह अपने सामर्थ पर खर्च कर सकें अत: आप विचार कीजिए। सभी सदस्यों ने जोरदार तालियां बजाई और उनका साधुवाद किया।

प्रधान महाशय धर्मपाल जी ने विभिन्न आर्य समाजों व आर्य संस्थाओं के प्रतिनिधियों के सहयोग हेतु धन्यवाद करते हुए सम्बोधित किया कि हम सब एक जुटकर होकर महर्षि के मिशन को आगे बढाएं। आयोजनों को विश्वस्तरीय बनाने के लिए हम सभी को कठिन परिश्रम व एक दूसरे का सहयोग करते हुए आगे बढ़ना है। गत वर्षों में जो आयोजन हुए उसमें मेरा कोई विशेष योगदान नहीं है। ये सब आप ही के पुरुषार्थ व मेहनत का नतीजा है अत: आपके सहयोग का बहुत-बहुत धन्यवाद। सभी सदस्यों ने तालियां बजाकर उनका धन्यवाद स्वीकार किया। तदुपरांत प्रधान महाशय धर्मपाल जी ने आगे की कार्यवाही के लिए महामंत्री से आग्रह किया। महामंत्री महोदय ने वर्तमान कार्यकारिणी को भंग करते हुए चुनाव अधिकारी **श्री धर्मपाल आर्य** प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को मंच पर आमन्त्रित किया।

सभा का आगामी निर्वाचन : चुनाव अधिकारी **श्री धर्मपाल आर्य** ने चुनाव की कार्यवाही को बढ़ाते हुए प्रधान पद के लिए नाम मांगे तो श्री शिव कुमार मदान, श्री विक्रम नरूला तथा श्री सुरेन्द्र कुमार रैली ने महाशय धर्मपाल जी के नाम का प्रस्ताव रखा तथा श्री जोगेन्द्र खट्टर, श्री एस.पी. सिंह, श्री सतीश चड्डा व अन्य सभी उपस्थित सदस्यों के साथ उनके नाम का अनुमोदन किया। चुनाव अधिकारी जी ने दूसरे नाम का प्रस्ताव मांगा पर किसी भी सदस्य का नाम नहीं आया। चुनाव अधिकारी महोदय ने **सर्वसम्मति से आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के लिए महाशय धर्मपाल जी को प्रधान घोषित किया।**

महाशय धर्मपाल जी ने सभी सदस्यों का मान रखते हुए पद स्वीकार किया तथा आये हुए सभी सदस्यों का धन्यवाद किया। महाशय जी ने आर्य समाजों के साप्ताहिक सत्संग के कार्यक्रमों में सदस्यों के बच्चों के जन्म दिन व वैवाहिक वर्षगांठ मनाने के विषय पर विचार करना चाहिए तथा लंगर व्यवस्था सुन्दर व व्यवस्थित करने का प्रयास करना चाहिए ताकि आने वाली पीढ़ी आर्य समाज को जाने-पहचाने व महर्षि के विचारों से अवगत हो।

आर्य प्रतिनिधि सभा म्यांमा (बर्मा) से आये **प्रधान श्री अशोक क्षेत्रपाल** तथा **श्री सुदर्शन मेहरा** का स्वागत किया गया तथा महाशय जी ने उन्हें अपना आशीर्वाद दिया। श्री विनय आर्य, महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने सभी सदस्यों से अनुरोध किया कि भविष्य में खर्चा बढ़ता जा रहा है तथा स्थाई निधियों का ब्याज कम हो रहा है यदि उनको बढ़ाया न गया तो भविष्य में कार्यक्रमों को और सुन्दर बनाना मुश्किल होगा। तब महाशय जी ने 16 लाख रुपये की स्थिर निधि हेतु अपने योगदान की घोषणा की तथा अन्य सदस्यों से भी अपना-अपना योगदान देने की अपील की।

- शेष पृष्ठ 8 पर

Veda Prarthana - 18

O Learned Brahmin! Help Others Acquire Prosperity in Life

- Acharya Gyaneshwarya

उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवान् यज्ञेन बोधय।
आयुः प्राणं प्रजां पशून् कीर्तिं यजमानं
च वर्धय।।

Uttishtha brahmanaspate devan yajnena bodhaya.

Ayuh pranam prajam pashoon kirtim yajamanam cha vardhaya.

(Atharva Veda 19:63:1)

Brahmnaspate O learned Brahmin, master of knowledge, uttishtha stand up for virtuous spiritual and social causes; do not become lazy or be lost in reciting mantras only, yajnena have a deep resolve and make a persistent effort to get involved in public's welfare, give them true knowledge, bodhaya devan first awaken and activate your own commitment to doing only virtuous and noble deeds, after that help others to achiev the same. Yajamanam enlighten people who host you or come in contact with you and help them accomplish the following: ayuh long life, pranam strength and health, prajam virtuous children, pashoon cattle for milk and agriculture, kirtim fame in the community cha and vardhaya increasing prosperity in all affairs of life.

This mantra addresses who is a brahmin and what are his/her responsibilities. Who is a brahmin? According to the Vedic tradition, one who has the knowledge of the Vedas and follows their teachings in his/her personal life is a brahmin. A person who has a deep abiding faith in God and a true understanding of God is a brahmin. A person who has control over his/her mind and senses as well has virtuous will power is a brahmin. A person who promoes and inspires the society, nation or the world to follow dharma, morality and virtue as well as works for the welfare of all others is a brahmin. This mantra alerts such a brahmin and states,"O brahmin! wake up, rise and stand up with a firm resolute mind to fulfill your responsibilities as stated above. Do not to become lazy and/or be lost in either performing rituals or reciting mantras only."

This mantra's segment devan yajnayana bodhaya (first line) means the following: the word bodhaya means awaken and activate, the word devan means virtuous sanskars (dormant innate memories and tendencies), and the word yajnayna means generous and selfless attributes. What are sanskars? Sanskars are root mental impressions, inclinations, and memories that have settled in our mind based on our past deeds in this and various previous lives (incarnations), as well as new sanskars we have generated in our current life. The Sanskrit word deva has several meanings: 1. God; 2. those persons who are generous, always doing good for mankind and the universe as well as are the embodiment of virtue and dharma; 3. physical objects and forces, such as the sun, the earth, air,water and fire because of their helpfulness to mankind; 4. divine generous attributes in a person. This mantra states O brahmin! activate your divine generous attributes i.e. your commitment to follow truth and doing only virtuous deeds in your own personal life irrespective of any hardships that come along the way. We are all born with a mixture of good and bad sanskars based on our deeds in previous lives. If we are born to virtuous parents or come in contact with virtuous gurus, teachers and/or learned persons, they help further activate our virtuous sanskars and direct our future desires and goals in life towards truth, virtuousness and generosity. If on the other hand one is born to parents with bad values or one keeps the company of those who have bad values, one is likely to activate one's previous bad sanskars (bad sanskars are also called Vasana) and keep away good sanskars from taking root and growing. O brahmin! your responsibility now is to awaken and activate your virtuous sanskars (which are currently dormant in you) just like seeds will germinate when given adequate soil and water. You will succeed in your goals when you have full faith and trust in God, live virtuously and practice true yoga, all of these will also help you eradicate bad sanskars just like seed grains which once roasted in fire never germinate again. The mantra further states, O brahmin! after uplifting yourself, activate your generous and selfless attributes in a selfless manner and make all effort to enlighten others towards following truth and virtue so they may also become noble persons.

what are the benefits of awakening and activating our virtuous sanskars as well as our generous and selfless attributes? The mantra states that first of all we are blessed with a long life. It is stated in the scriptures that if one practices brahmacharya (the word brahmacharya literally means all conduct in life that promotes a feeling of being close to God, the emphasis in the Vedic scriptures has always been on being chaste in thoughts, words and actions) and other virtuous practices in life for several generations, the latter offspring can live a healthy life for up to 200 years and sometimes even up to 400 years. The next benefit according to this mantra is that not only one has a long life but it is healthy, full of strength, vitality and vigor. The person so blessed is not a lazy self-centered person but rather an active person who generously participates in all affairs of the community for the welfare of the society, nation and the world. To obtain this benefit our rishis have promoted pranayam at least two times every day. The next benefit according to this mantra is that persons who are disciplined in life, follow noble virtuous principles. are truthful and honest in their interactions with others, are generous to others especially those in need are themselves blessed with noble virtuous children and family. On the other hand persons who are untruthful, greedy, miserly, full of lust, selfish, vane, ungrateful, lazy or cruel are more likely to have children with similar values. The next benefit according to this mantra is that persons with the attributes of a brahmin (and those follow such a person's teachings) are blessed with healthy cattle to obtain good satvik (that promote virtuous mind and values) healthy foods such as milk and other milk products and organic agiculture that will indirectly promote healthy environment. People who eat healthy simple fresh vegetarian foods and especially drink cow's milk produced by cows who feed in organically grown pastures are more likely to be healthy, bright, thoughtful, peaceful, virtuous and generous. On the other hand people who eat leftover, preserved, aged, canned, spicy, salty, very sour or oily foods as well those who eat prohibited foods such as meat, fish, poultry etc. are more likely to be sick, ill tempered, less peaceful and cruel.

Those persons who activate their divine generous attributes by making a commitment to follow truth and doing only virtuous deeds in their personal lives' i.e. have the attributes of a brahmin eventually receive honor, recognition and fame in the community, nation and the world. Only such person's can help generate similarly oriented new leaders who have integrity, honesty, virtuousness and are models to others. By their own example, only persons with the attributes of a brahmin, can promote dharma, virtuous morality, culture and decency in the public at large. O followers of the Vedas and the devotees of true God, come join and together let us activate our divine virtuous and generous attributes that are dormant in us as well as may we promote the same in others. Dear God, You are our Ultimate Leader, Guru and Teacher, please instruct, guide and inspire us so we may progerssively acquire more and more attributes that make a person a respected brahmin and thus not only redeem ourselves but also make utmost effort to help others in the society and the nation to acquire virtuous and generous attributes in their lives.

(For benefits of virtuous conduct in life also see mantra # 7,9,24,25,26,27 and 29)

To be continued...

आओ ! संस्कृत सीखें

शब्दार्थ - 30 तृतीया विभक्ति नियम

गतांक से आगे....

वाक्य में सह या उसके अर्थवाची शब्द होने पर अप्रधान कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है।

उदाहरण- रामः जनकेन सार्धं गच्छति। यहां जाने की क्रिया का सीधा सम्बन्ध राम से है व गौण(अप्रधान) रूप से जनक से भी है। वाक्य में सह के अर्थ वाले ''सार्धम्'' शब्द का प्रयोग है ही अतः अप्रधान कर्ता जनक में तृतीया विभक्ति हुई। इसी प्रकार-

2) पुत्रेण सह पिता आगतः।
पुत्र के साथ पिता आया।

3) श्यामेन साकं स्थूलः पुरुषः आसीत् ।
श्याम के साथ मोटा व्यक्ति था।

4) लतया सार्धं शीला आसीत्।
लता के साथ शीला थी।

5) मया सह अशोकः भविष्यति।
मेरे साथ अशोक होगा।

6) सः मया सह आपणम् अगच्छत्।
वह मेरे साथ बाजार को गया।

7) अहं तेन सह नगरम् अगच्छम्।
मैं उसके साथ नगर को गया।

8) मोहनः भ्रात्रा साकं कार्यं करिष्यति।
मोहन भाई के साथ कार्य को करेगा ।

9) अहं त्वया सह भ्रमणाय गमिश्यामि।
मैं तुम्हारे साथ घूमने के लिए जाऊँगा।

10) अद्य अहं मात्रा सह गृहे स्थास्यामि।
आज मैं माता के साथ घर में ठहरुंगा।

तृतीया-विभक्ति नियम

जिस चिह्न से किसी व्यक्ति या वस्तु का बोध होता है उसमें तृतीया विभक्ति होती है।

उदाहरण- जटाभिः सन्यासी अस्ति। यहां जटाओं के द्वारा संन्यासी होने का बोध होता है अतः जटा शब्द में तृतीया विभक्ति होती है। इसी प्रकार-

२) कमण्डलुना छात्रः भवति।
कमण्डल से छात्र होता है।

३) सः मेखलया ब्रह्मचारी आसीत्।
वह मेखला से ब्रह्मचारी था।

४) एते यज्ञोपवीतैः द्विजाः प्रतीयन्ते।
ये यज्ञोपवीत से विद्वान् प्रतीत हो रहे हैं।

५) काषायैः वस्त्रैः भवान्यतिः प्रतिभाति।
गेरुएं वस्त्र से आप सन्यासी लग रहे हैं।

६) अहं पीतवस्त्रैः ब्रह्मचारिणम् अपश्यम्।
मैंने पीले वस्त्रों से ब्रह्मचारी को देखा।

७) श्वेतवस्त्रैः सः साधुः अस्ति।
श्वेतवस्त्रों से वह साधु है।

८) त्वचायाः शिथिलतया सः वद्धः प्रतीयते।
त्वचा की शिथिलता से वह बूढा लग रहा है।

९) कारयानेन सः धनी प्रतीयते।
कार से वह धनी लगता है।

१०) शस्त्रेण सः रक्षकः प्रतिभाति।
शस्त्र से वह पुलिस वाला लगता है।

- क्रमशः -

आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय
मो. 9899875130

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत

केरल में स्वाध्याय एवं भ्रमण शिविर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत केरल में 9 दिवसीय स्वाध्याय एवं भ्रमण शिविर का **23-31 जनवरी, 2018** में आयोजित किया जा रहा है। **कुल यात्रा व्यय हवाई जहाज से 17500/- रुपये है।** इसमें होटल आवास, भोजन एवं हवाई यात्रा दो दिन मन्नार एवं एक दिन ऐलैपी बैक वाटर्स भ्रमण भी सम्मिलित है। 4 दिवसीय स्वाध्याय शिविर में **महाशय धर्मपाल वेद अनुसंधान केन्द्र कालीकट** में आयोजित होगा जिसमें विभिन्न वैदिक विद्वानों द्वारा स्वाध्याय एवं प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा। **सीमित 40 सीटें। पहले आओ-पहले पाओ** के आधार पर व्यवस्था। **प्रस्थान** हवाई जहाज से 23 जनवरी की प्रात: तथा **वापसी 31 जनवरी** की रात्रि में होगी। जो आर्यजन शिविर में सम्मिलित होना चाहते हैं वे **श्री शिव कुमार मदान, यात्रा संयोजक (मो.नं. 9310474979)** से सम्पर्क करें। *- महामन्त्री*

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों में

अधिकतम संख्या दिवस
1 अप्रैल, 2018

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की सूचनार्थ निवेदन है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा दिनांक 1 अप्रैल, 2018 को अधिकतम संख्या दिवस का आयोजन किया जा रहा है। समस्त आर्यजनों से निवेदन है कि इस दिन अपनी आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग में अवश्य ही सम्मिलित हों। समस्त आर्यसमाजों से भी निवेदन है कि अपनी आर्यसमाज के समस्त सदस्यों को सूचित करें कि इस दिन के सत्संग में सब कार्य छोड़कर अवश्य सम्मिलित हों। सबसे अधिक उपस्थिति वाली आर्यसमाज को सभा की ओर से पुरस्कृत किया जाएगा। अत: अपनी आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग की उपस्थिति पंजीका के उस दिन की उपस्थिति की फोटो प्रति अपने पत्र के साथ सभा कार्यालय - 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली के पते पर भिजवाना न भूलें। *- विनय आर्य, महामन्त्री*

आर्य वीरांगनाओं, शिक्षिकाओं एवं कार्यकर्त्ता बहनों का राष्ट्रीय सम्मेलन

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल के तत्त्वावधान में वीरांगनाओं, शिक्षिकाओं एवं कार्यकर्त्ता बहनों का राष्ट्रीय सम्मेलन 23 व 24 दिसम्बर 2017 को आर्य समाज बी ब्लाक, जनकपुरी नई दिल्ली में आयोजित किया जाएगा। कृपया अपना पंजीयन 16 दिसम्बर तक करा लें।

-साध्वी डॉ. उत्तमा यति, प्रधान संचालिक, मो. 9672286863

15वें वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज जे.वी.टी.एस. गार्डन, छत्तरपुर एक्सटेशन 24 से 26 नवम्बर के बीच अपना 15वां वार्षिकोत्सव आयोजित कर रहा है। इस अवसर पर ऋग्वेद एवं गायत्री महायज्ञ, आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री के ब्रह्मत्व में होगा एवं प्रवचन आचार्य शिव कुमार शास्त्री, भजन श्री दिनेश दत्त आर्य, वेदपाठ गुरुकुल गौतम नगर के ब्रह्मचारियों द्वारा होगा। *- ओम कुमार आर्य, मंत्री*

25वां वार्षिकोत्सव समारोह

आर्यसमाज नांगल राया नई दिल्ली का वेद प्रचार कार्यक्रम 2 से 5 नवम्बर तक आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर प्रवचन आचार्य भद्रकाम वर्णी जी एवं भजन श्री भानु प्रकाश शास्त्री के होंगे।

-भगवान दास, मन्त्री

वेद प्रचार कार्यक्रम

आर्य समाज संदेश विहार, दिल्ली का 25वां वार्षिकोत्सव 2 से 5 नवम्बर तक आयोजित किया जा रहा है। आचार्य गौतम जी के सान्निध्य में यज्ञ, प्रवचन, भजन एवं बच्चों के कार्यक्रम होंगे।

-देवमित्र आर्य, मंत्री

दिव्य वैदिक सत्संग समारोह

आर्य समाज गांधीधाम 12 से 14 जनवरी 2018 के बीच दिव्य वैदिक सत्संग समारोह का आयोजन कर रहा है। इस समारोह में बहु कुण्डीय यज्ञ, विविध पारिवारिक विषयों पर सम्मेलन, नगर शोभायात्रा, आर्य वीर दल का शक्ति प्रदर्शन, आर्य जगत के मूर्धन्य व्यक्ति अमेरिका निवासी श्री गिरीश खोसलाजी का 70वां जन्मदिन धूमधाम से मनाया जायेगा। *-वाचोनिधि आर्य, प्रधान*

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

आर्यसमाज डी.सी.एम. रेलवे कालोनी के नए भवन का लोकार्पण : 10 दिसम्बर प्रात: 10 बजे से

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत संचालित आर्यसमाज डी.सी.एम. रेलवे कालोनी, किशनगंज, नई दिल्ली के नए निर्मित भवन का लोकार्पण समारोह रविवार 10 दिसम्बर, 2017 को प्रात: 10 बजे से 2 बजे तक हर्षोलासपूर्वक आयोजित किया जाएगा। इस अवसर पर यज्ञ एवं भजन संध्या का आयोजन किया जाएगा।

इसी अवसर पर सभा द्वारा संचालित दो महत्वपूर्ण योजनाओं **'सहयोग'** एवं **'यज्ञ सुविधा केन्द्र'** का भी औपचारिक उद्घाटन एवं लोकार्पण भी किया जाएगा।

आर्यजनों से निवेदन है कि वे आयोजन की तिथि नोट कर लें और अधिक से अधिक संख्या में पहुंचकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं। समारोह के उपरान्त सभी उपस्थित महानुभावों के लिए ऋषि लंगर की व्यवस्था की गई है। *- महामन्त्री*

वैदिक विद्वानों की आवश्यकता

दिल्ली के विभिन्न आर्य समाजों के लिए गुरुकुलीय शिक्षा से परिपूर्ण वैदिक विद्वानों की आवश्यकता है। जो वैदिक विद्वान अपनी सेवाएं दिल्ली के आर्य समाजों को देने के इच्छुक हों वह अपना जीवनवृत्त 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा -15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001' में अथवा aryasabha@yahoo.com के पते पर मेल कर सकते हैं। **-महामंत्री**

वार्षिकोत्सव आयोजित

आर्य समाज नोएडा का वार्षिकोत्सव 6 से 10 दिसम्बर तक आयोजित किया जाएगा। इसके अन्तर्गत ऋग्वेद पारायण यज्ञ, 101 कुण्डीय शान्ति सौहार्द महायज्ञ, क्रांतिकारी देशभक्त गीत, वेद कथा, महिला सम्मेलन, बौद्धिक व शारीरिक कौशल, सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन, महर्षि दयानन्द उपकार गुरुकुल एवं बलिदान सम्मेलन आदि कार्यक्रम आयोजित किये जाएंगे

- आर्य कै. अशोक गुलाटी, महामंत्री

138वां वार्षिक महोत्सव

आर्य समाज धामावाला, देहरादून का 138वां महोत्सव 24 से 26 नवम्बर 2017 के बीच प्रो. आचार्य विनय विद्यालंकार जी की अध्यक्षता में आयोजित किया जाएगा। कार्यक्रम के अन्तर्गत यज्ञ, वेद प्रवचन व भजनों का आयोजन किया जाएगा। यज्ञ ब्रह्मा श्री विद्यापति शास्त्री, होंगे। *- नवीन भट्ट, मंत्री*

स्नातक संगोष्ठी का आयोजन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा शीघ्र ही गुरुकुल स्नातक संगोष्ठी का आयोजित करना चाहती है, जिसमें ऐसे सभी महानुभावों जो गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति से शिक्षा प्राप्त हैं तथा दिल्ली में रहते हुए अपना व्यवसाय-व्यापार अथवा दिल्ली के विद्यालयों अथवा अन्य संस्थानों में अध्यापन कार्य में सेवारत हैं एवं पुरोहित कर्म नहीं करते हैं, को आमन्त्रित किया जाएगा। अत: यदि आप ऐसे महानुभाव हैं अथवा किसी ऐसे महानुभावों को जानते हैं तो कृपया अपना/उनका नाम, पता, मो. नं., ईमेल पता श्री राजीव चौधरी जी (09540095151) को लिखवाने अथवा daps.mediadesk @gmail.com पर भेजने की कृपा करें, जिससे संगोष्ठी की सूचना भेजी जा सके। *- महामन्त्री*

12वें वार्षिकोत्सव का आयोजन

आर्ष योग संस्थान, फरीदाबाद का 12वां वार्षिकोत्सव 19 नवम्बर 2017 को ग्राम बड़ौली, नीमका रोड, सैक्टर-76 फरीदाबाद में महाशय धर्मपाल (चेयरमैन, एम.डी.एच.) की अध्यक्षता में आयोजित किया जाएगा। मुख्य अतिथि डॉ. सत्यपाल सिंह, केन्द्रीय मंत्री, मानव संसाधन विकास एवं विशिष्ट अतिथि श्री सुरेश चन्द्र आर्य, प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा होंगे। इस अवसर पर आरोग्य मन्दिर का उद्घाटन, सामवेद पाराणय यज्ञ, आकर्षक व्यायाम का प्रदर्शन होगा।

- गोपीचन्द आर्य, मंत्री

शोक समचार

श्री तेजवीर सिंह आर्य को पुत्र शोक

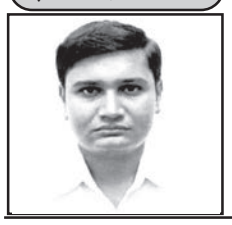

आर्य समाज किरण गार्डन, उत्तम नगर, नई दिल्ली के मन्त्री तेजवीर सिंह आर्य जी के सुपुत्र श्री निशान्त का 11 अक्टबूर 2017 को किडनी फेल होने के कारण मात्र 35 वर्ष की आयु में आकस्मिक निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

श्री मदन मोहन सलूजा को जामाता शोक

आर्यसमाज पंजाबी बाग विस्तार के पूर्व पधान एवं आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के संरक्षक, यज्ञ प्रेमी, सभा के समस्त कार्यक्रमों में यज्ञ व्यवस्था करने वाले, परम सहयोगी श्री मदन मोहन सलूजा जी के जामाता एवं उनकी सुपुत्री श्रीमती अंजू खेर के पूज्य पति श्री अनिल खेर जी का 31 अक्तूबर, 2017 को फोर्टिस हॉस्पीटल में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार 1 नवम्बर को छतरपुर शमशान घाट में सम्पन्न हुआ। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांलि सभा शुक्रवार 3 नवम्बर को 12-शकुन्तला फार्मस, घिटोरनी, नई दिल्ली में सम्पन्न हुई।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 30अक्तूबर, 2017 से रविवार 5 नवम्बर, 2017

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 2-3 नवम्बर, 2017

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0सी0) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 1 नवम्बर, 2017

पृष्ठ 4 का शेष

महर्षि दयानन्द सरस्वती का .....

कार्यक्रम में प्रसिद्ध उद्योगपति श्री योगेश मुंजाल, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, सर्वश्री ओम प्रकाश आर्य, शिव कुमार मदान, ईश नारंग, अरुण प्रकाश वर्मा, राजेन्द्र दुर्गा, एस.पी. सिंह, सुखबीर सिंह आर्य, रामनाथ सहगल, विद्यामित्र ठुकराल, मदन मोहन सलूजा, शिव भगवान लाहौटी, ओम प्रकाश घई, विक्रम नरूला, अजय सहगल, योगेश आर्य, जोगेन्द्र खट्टर, हरिओम बंसल, राजीव चौधरी, श्रीमती उषा किरण आर्य एवं दिल्ली की विभिन्न आर्य समाजों के पदाधिकारियों ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति दर्ज कराई। प्रसिद्ध समाज सेवी व श्री मनुज सेठ, प्रसिद्ध समाज सेवी व आर्यसमाज के विभिन्न कार्यों में महत्वपूर्ण योगदान हेतु स्मृति चिन्ह व शाल द्वारा सम्मान दिया गया। इस अवसर पर स्वामी विद्यानन्द सरस्वती वैदिक विद्वान पुरस्कार से आचार्य सामश्रवा शास्त्री, डॉ. मुमुक्ष आर्य पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी स्मृति पुरस्कार से श्री अभिमन्यु चावला तथा श्रीमती हर्ष नारंग महिला कार्यकर्त्ता पुरस्कार से श्रीमती शशि चोपड़ा को सम्मनित किया गया। शान्ति गीत व शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। प्रस्तुत रिपोर्ट तैयार करते समय जिन महानुभावों एवं पदाधिकारियों के नाम लिखने से रह गये हों उनके लिए क्षमाप्रार्थी हैं।- *सतीश चड्डा, महामंत्री*

कैलेण्डर वर्ष 2018

मूल्य 1200/-रुपये सैंकड़ा

200 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (300/- सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें-

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.), 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष : 23360150, मो. 09540040339

पृष्ठ 5 का शेष

महाशय धर्मपाल सर्वसम्मति से पुन: प्रधान निर्वाचित

श्री विनय आर्य ने इस विषय को गम्भीरता पूर्वक लेने की तथा विचार करने की पुन: अपील की कि आप चाहे व्यक्तिगत योगदान दें अथवा अपनी आर्य समाज या आर्य संस्था की तरफ से। कुछ न कुछ योगदान की घोषणा करके जाएं ताकि हम सबकी यह सभा आर्थिक रूप से समर्थ हो सके।

उन्होंने सभी दानदाताओं धन्यवाद व आभार प्रकट किया तथा अन्य सदस्यों को भी सुझाव दिया कि वे अपनी कार्यकारिणी के साथ विचार विमर्श के पश्चात् दान दे सकते हैं इन सभी राशियों की स्थिर निधियां बनवा दी जावेगी जिससे इनके ब्याज से आर्य केन्द्रीय सभा चिरकाल तक और अच्छे कार्यक्रमों का आयोजन कर सके।

महाशय धर्मपाल जी ने सभी दानी महानुभावों तथा समाज के अधिकारियों को आशीर्वाद दिया तथा आर्य समाज पटेल नगर के अधिकारियों का नाश्ते की व्यवस्था हेतु धन्यवाद किया। शान्ति पाठ के साथ बैठक सौहार्दपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुई। उपस्थित सदस्यों को आर्य केन्द्रीय सभा की ओर से नववर्ष 2018 का कलैण्डर भेंट किया गया। - **सतीश चड्डा**

प्रतिष्ठा में,

आर्यसमाज का YouTube टीवी चैनल

27 लाख से ज्यादा लोगों ने देखा

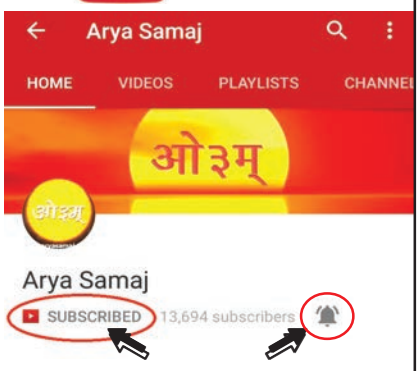

आप भी देखें और सब्सक्राइब करें; घंटी बटन को दबाकर नई वीडियो की सूचना प्राप्त करें।

आप अपने कार्यक्रमों - भजन, प्रवचन, सन्देशात्मक कार्यक्रम, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों को इस चैनल पर अपलोड कराने के लिए upload@thearyasamaj.org पर भेजें।

- महामन्त्री

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह